# आओ, स्कूल चलें हम!

मेरा नाम अनामिका है। मैं एक टीचर हूँ। कोरोना की वजह से डेढ़ साल से हमारा स्कूल बंद है। इसका बच्चों की पढ़ाई और सपनों पर क्या प्रभाव पड़ा है?

पहले सारे बच्चे स्कूल असेम्ब्ली में इकट्ठा होते थे। सुबह-सुबह सबके चेहरे देखकर कितना अच्छा लगता था।

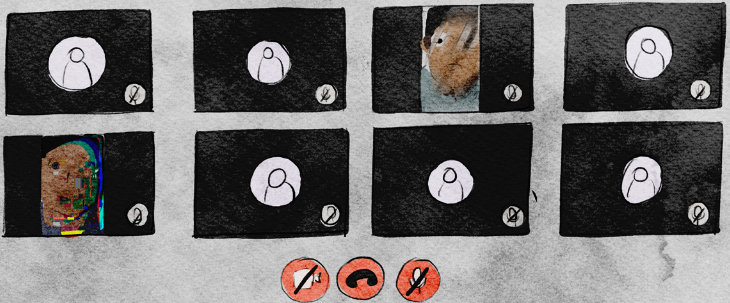

अब सब ऑनलाइन हाज़िरी देते हैं।

यह बच्चा बरगद के पेड़ के नीचे बैठ के पढ़ता है, क्यूंकि कहीं और नेटवर्क नहीं मिलता।
इस लड़की की छोटी बहन उसे पढ़ने नहीं देती।
एक ही फ़ोन से 4 या 5 बच्चे मिल कर पढ़ते हैं। सब फ्रेम में फ़िट भी नहीं हो पाते।
एक लड़की है जिसको घर की परिस्थितियों की वजह से स्कूल छोड़ना पड़ा है। वो फिलहाल चित्रकूट जिले के मन्दाकिनी नदी के किनारे दिये बेचती है।

12:01 PM
आसिया टीचर
मैं बच्चों के साथ क्लास बहुत मिस करती हूँ। और दिनेश भैया की चाय और स्टाफ़ रूम की गपशप भी।
आसिया, आज 70 में से सिर्फ 30 बच्चे आये। आधे से भी कम।
हाँ, स्मार्टफ़ोन जैसे संसाधन न होने की वजह से बच्चों के दो साल बर्बाद हो गए हैं।
इस दौरान इन बच्चों के सपनों का क्या हुआ होगा?

# उत्तर प्रदेश में कितने किशोर किशोरियों के पास मोबाइल हैं?

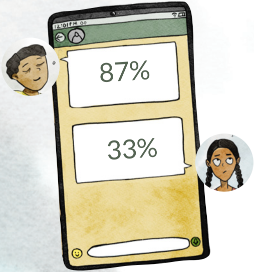


2018 - 2019 में 18 - 22 वर्षीया अविवाहित किशोर और किशोरियां

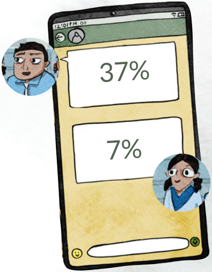


2018 - 2019 में 13 - 17 वर्षीया अविवाहित किशोर और किशोरियां

सोर्स: उत्तर प्रदेश और बिहार में उदया सर्वेक्षण 2015 - 2016 और 2018 - 2019

देश में मोबाइल फ़ोन और इंटरनेट का उपयोग तो बढ़ा है, लेकिन डिजिटल असमानता बहुत ज़्यादा है। ख़ासकर बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने में। सेंटर फॉर कैटलाइज़िंग चेंज के अप्रैल–अगस्त 2020 के चार राज्यों के सर्वे में पाया गया कि 80% स्कूल के बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा लेने में दिक्कत हुई है। जैसे नोटबुक और किताबें न होना, इंटरनेट और मोबाइल की सुविधा न होना।

मैंने अपने क्लास के बच्चों को एक असाइनमेंट दिया है।

स्कूल में, मैं शौचालय का इस्तेमाल कर पाती थी। मेरे घर में बाथरूम नहीं है। स्कूल में तो मुझे सेनेटरी पैड भी मिलते थे।

मैं बड़ी होकर डॉक्टर बनना चाहती हूँ, ताकि मैं अपनी क्लिनिक अपने गांव में खोलूं और लोगों को स्वास्थ्य की सुविधा मिल सके।

लॉकडाउन जब शुरू हुआ मैं बहुत खुश था। ऐसा लगा कि हम छुट्टी पर हैं। पूरे दिन वीडियो गेम खेलना, पिक्चर देखना। फिर मैं बोर हो गया और अब स्कूल मिस करता हूँ।
प्राथमिक विद्यालय
IAS. MODAK
मुझे आईएएस अफ़सर बनना है। लेकिन जब एग्ज़ाम ही नहीं हो रहे हैं तो क्या हम अपने सपने पूरे कर पाएंगे?

मैं स्कूल को बहुत मिस कर रही हूँ। सबसे ज़्यादा अपने दोस्तों को। हम कितनी सारी बातें करते थे! और मस्ती भी।
मैं पुलिस अफसर बनना चाहती हूँ क्यूंकि मैं निडर हूँ।

साभारः यह ज़ीन बहनबॉक्स और चित्रकूट कलेक्टिव की पेशकश है। डाटा उदया सर्वे से लिया गया है। यह प्रोजेक्ट पॉपुलेशन कॉउंसिल के उदया ग्रांट से संभव हुआ है।